

सोशल मीडिया के सामाजिक एवं शैक्षिक प्रभाव का विश्लेषण एवं इसके शैक्षिक निहितार्थ

डॉ. दिनेश कुमार मौर्य¹, मनीष कुमार सिंह²

¹एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, बलरामपुर एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज,
बलरामपुर (उत्तर प्रदेश) 271201

²शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र) एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज बलरामपुर (उत्तर प्रदेश) 271201

सारांश

क्या हम ये मान सकते हैं कि सोशल मीडिया शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित करता है. सकारात्मक प्रभावों में बेहतर संचार, सहयोग, सहयोगात्मक शिक्षण और शैक्षिक सामग्री तक आसान पहुँच शामिल है, जिससे छात्रों की भागीदारी और प्रेरणा बढ़ सकती है ; नकारात्मक प्रभावों में ध्यान भटकना, शैक्षणिक जिम्मेदारियों की उपेक्षा, और अत्यधिक उपयोग से जुड़ा तनाव शामिल है. इसके शैक्षिक निहितार्थों में शिक्षकों और छात्रों दोनों को सोशल मीडिया का जागरूक और प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता, ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षण विधियों का एकीकरण, और छात्रों के लिए एक सुरक्षित और सहायक ऑनलाइन वातावरण सुनिश्चित करना शामिल है। सोशल नेटवर्क टूल छात्रों और संस्थानों को शिक्षण विधियों को बेहतर बनाने के कई अवसर प्रदान करते हैं। इन नेटवर्कों के माध्यम से, आप सोशल मीडिया प्लगइन्स को शामिल कर सकते हैं जो साझाकरण और सहभागिता को सक्षम बनाते हैं। छात्र **YouTube** के माध्यम से ऑनलाइन ट्यूटोरियल, स्काइप के माध्यम से विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान किए जाने वाले ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और सोशल नेटवर्क के माध्यम से साझा किए जाने वाले संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला से लाभ उठा सकते हैं।

संकेत शब्द-- शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षा नीति, संसाधन, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम, अकादमिक निपुणता

प्रस्तावना

शब्दकोश की परिभाषा के अनुसार, "सोशल मीडिया वे वेबसाइट और एप्लिकेशन हैं जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री बनाने और साझा करने या सोशल नेटवर्किंग में भाग लेने में सक्षम बनाते हैं।" सोशल मीडिया केवल छुट्टियों की तस्वीरें ऑनलाइन पोस्ट करने तक ही सीमित नहीं है। सोशल मीडिया ने पिछले कुछ वर्षों में सूचना के एक विश्वसनीय स्रोत और एक ऐसे मंच के रूप में अपनी विश्वसनीयता हासिल की है जहाँ संगठन दर्शकों के साथ बातचीत कर सकते हैं। आज, हम देख सकते हैं कि शिक्षा संस्थान इन विकासों को अपनी प्रणालियों में अपना रहे हैं और छात्र जीवन को बेहतर बनाने के लिए समूह संसाधनों और तंत्रों पर निर्भर हैं। शिक्षा में सोशल मीडिया का उपयोग छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को अधिक उपयोगी जानकारी प्राप्त करने, शिक्षण समूहों और अन्य शैक्षिक प्रणालियों से जुड़ने में मदद करता है जो शिक्षा को सुविधाजनक बनाते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से अध्ययन के उद्देश्यों के लिए विभिन्न विषयों या मुद्दों पर विश्लेषण और अंतर्दृष्टि जैसे बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त किए जा

सकते हैं। एक शैक्षणिक संस्थान के रूप में, यथासंभव अधिक से अधिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सक्रिय रहना महत्वपूर्ण है, इससे बेहतर छात्र प्रशिक्षण रणनीतियाँ बनाने और छात्र संस्कृति को आकार देने में मदद मिलती है। शिक्षा में सोशल मीडिया के उपयोग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि आप जल्द ही जान जाते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों के विशेषज्ञ कौन हैं। जब आप इन विशेषज्ञों का अनुसरण करना शुरू करते हैं, तो आप अधिक सीखते हैं और उनसे उपयोगी सामग्री प्राप्त करते हैं, यह आपको बेहतर परिणाम देने में सक्षम बनाता है। सोशल मीडिया विभिन्न विषयों पर आपके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने और आपको तुरंत नई जानकारी देने वाली सामग्री प्रदान करने की क्षमता रखता है। आपके पास उन विषयों पर विशेषज्ञों से संपर्क करने का अवसर है जिनमें आपको मदद की आवश्यकता हो सकती है।

संचार और जुड़ाव

शिक्षण महाविद्यालयों के पास फेसबुक, गूगल प्लस ग्रुप और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया नेटवर्क के माध्यम से छात्रों से जुड़ने की क्षमता है। इन माध्यमों का उपयोग परिसर की खबरें साझा करने, घोषणाएँ करने और छात्रों को उपयोगी जानकारी प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। इससे कॉलेज और छात्रों के बीच जुड़ाव बढ़ता है जिससे समूह बातचीत के माध्यम से कई छात्र समस्याओं का समाधान करने में मदद मिलती है।

एलएमएस के साथ शिक्षा को बढ़ावा देना

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस) एक नेटवर्किंग सॉफ्टवेयर है जो शैक्षिक कार्यक्रम प्रदान करता है और संस्थानों को अन्य प्रशासनिक गतिविधियाँ प्रदान करता है। एलएमएस में सोशल मीडिया लर्निंग में छात्रों की सहायता के लिए तत्काल चैट फ़ंक्शन, वीडियो, जानकारी साझा करने के लिए फ़ोरम और अन्य पाठ संसाधन शामिल हो सकते हैं।

एलएमएस सिस्टम छात्रों की भागीदारी को मज़बूत करता है और टीम प्रोजेक्ट्स में सहयोग को आसान बनाता है। यह सिस्टम छात्रों और सीखने से संबंधित मुद्दों को हल करने और शिक्षा योजनाओं को बेहतर बनाने के लिए मौजूद है। संस्थानों के लिए सोशल मीडिया एकीकरण के साथ लोकप्रिय लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम का उपयोग करना फायदेमंद है ताकि सिस्टम के माध्यम से सर्वोत्तम पहुँच और प्रभाव प्राप्त किया जा सके। अन्य सोशल लर्निंग लाभों में लाइव कॉन्फ़ेरेंसिंग सिस्टम, वेबिनार क्षमता, शेयर ग्रुप रिव्यू, ब्लॉग और बहुत कुछ शामिल हैं।

शिक्षा में सोशल मीडिया का प्रभाव निर्विवाद है। इसने न केवल छात्रों के एक-दूसरे और अपने शिक्षकों के साथ संवाद करने के तरीके को बदल दिया है, बल्कि सहयोगात्मक शिक्षण, ज्ञान साझा करने और डिजिटल कौशल के विकास के नए अवसर भी खोले हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव और छात्रों की आर्थिक और सामाजिक विशेषताओं के साथ इसके संबंध का अध्ययन करना है ताकि कुछ मार्गदर्शक नीतियाँ विकसित की जा सकें और उचित उपयोग प्राप्त किया जा सके।

साहित्य समीक्षा

युवाओं द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग संचार संस्कृति के प्रमुख स्तंभों में से एक है, जो अक्सर उपयोगकर्ताओं की सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक विशेषताओं से जुड़ा होता है। संचार की यह नई

संस्कृति, उपयोग की प्रकृति, चाहे वह सही हो या गलत, और उपयोग के उद्देश्य, चाहे संज्ञानात्मक हों या मनोरंजक, तथा सामान्य लाभ प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शक नीतियों के निर्धारण पर इसके प्रभाव के संदर्भ में उपयोगकर्ताओं के विभिन्न व्यवहार पैटर्न को प्रभावित करती है।

डॉ. अशोक आनंद (2018) ने अयोध्या जनपद के युवाओं द्वारा इंटरनेट के उपयोग के पैटर्न और चालकों का अध्ययन किया। यह 18 से 35 वर्ष की आयु के 149 लोगों के नमूने पर किया गया था। अध्ययन से पता चला कि इंटरनेट का उपयोग करने वाले युवाओं के मुख्य उद्देश्य सूचना प्राप्त करना (72.7%), मनोरंजन और आनंद (47%), दोस्त बनाना और जिज्ञासा (42.3%), ज्ञान (25.5%), और अंत में फुर्सत का समय (6%) हैं।

डॉ. असीम अरुण ने लखनऊ मंडल के (5) विश्वविद्यालय के 200 छात्रों के नमूने पर लखनऊ मंडल में इंटरनेट के उपयोग पर एक अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि (72.6%) छात्र इंटरनेट का उपयोग करते हैं और अधिकांश उपयोगकर्ताओं (91.5%) के लिए इंटरनेट सूचना का एक अनिवार्य स्रोत है।

शैक्षणिक उपलब्धि के साथ इंटरनेट के उपयोग के व्यवहार की जाँच करने वाले अध्ययनों में से एक न्यूयॉर्क में एंडरसन (2001) का अध्ययन है, जहाँ उन्होंने आठ विश्वविद्यालय-कॉलेजों के (1302) पुरुष और महिला छात्रों के नमूने पर एक सर्वेक्षण अध्ययन किया।

हांग एट अल. (2003) ने दिल्ली विश्वविद्यालय के पाँच अलग-अलग कॉलेजों में पढ़ने वाले (88) विश्वविद्यालय के छात्रों के एक नमूने पर एक अध्ययन किया, जिसमें शैक्षिक पद्धति के रूप में इंटरनेट के प्रति उनके दृष्टिकोण को मापने के लिए सात मर्कों के पैमाने का उपयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा में इंटरनेट के उपयोग के प्रति एक सकारात्मक रुझान है।

इसके अलावा, कार्बिन्सकी (2010) द्वारा न्यूयॉर्क में (219) विश्वविद्यालय के छात्रों पर किए गए एक अध्ययन का उद्देश्य विश्वविद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर "फेसबुक" साइट का उपयोग करने के प्रभाव की पहचान करना था।

ली और जेंग (2011) ने कोलकाता विश्वविद्यालय में अध्ययनरत (616) छात्रों के एक नमूने पर किशोर छात्रों के बीच इंटरनेट के उपयोग के उद्देश्यों, उनके शैक्षणिक और सामाजिक जीवन पर उनके प्रभाव की सीमा और उनकी मनोवैज्ञानिक अनुकूलता का निर्धारण करने के लिए एक अध्ययन किया।

शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश (2013) ने एक विशेष प्रश्नावली तैयार करके छात्रों पर सोशल मीडिया टूल्स के सामाजिक रूप से व्यावहारिक प्रभाव की संभावना का अध्ययन किया। उनके वार्ताकारों की प्रश्नावली, जिसमें (400) छात्र शामिल थे, ने छात्र के लिए इसके महत्व, उपयोग की अवधि, इसके उपयोग के कारणों और सोशल मीडिया के फायदे और नुकसान के अनुसार सोशल मीडिया के उपयोग को व्यवस्थित करने पर ध्यान केंद्रित किया।

हाल ही में, अभिजीत (2021) ने छात्रों के सामाजिक संपर्क पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के प्रभाव की जाँच के लिए एक अध्ययन किया। अध्ययन में (449) छात्रों के बीच वितरित एक ऑनलाइन प्रश्नावली का इस्तेमाल किया गया, जिसमें 72% प्रतिक्रिया दर थी। उनके अध्ययन का प्राथमिक परिणाम यह है कि सोशल मीडिया छात्रों के सामाजिक संपर्क और दोस्तों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय को

सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग किस तरह किया जाता है।

सुझाव और सिफ़ारिशें

महामारी (COVID-19) के प्रकोप के कारण, दुनिया भर की आबादी का डिजिटल तकनीकों की ओर रूपांतरण किसी की कल्पना से परे तेजी से बढ़ा। सरकार द्वारा सामूहिक समारोहों के प्रतिबंध के बाद, शैक्षणिक प्रणाली गंभीर रूप से प्रभावित होने वाले पहले क्षेत्रों में से एक थी। आमने-सामने सीखने पर प्रतिबंध था; इस प्रकार, सभी कक्षाओं को निवारक उपाय के रूप में रोक दिया गया था। नतीजतन, शिक्षकों और प्रशिक्षकों ने छात्रों के साथ अपने शैक्षणिक प्रवचन को जारी रखने के लिए संवाद करने के विभिन्न तरीकों की खोज शुरू कर दी, जिससे आभासी कक्षाओं की शुरुआत हुई। यह घटना विश्व शैक्षणिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में कार्य करती है। घातक बीमारी COVID-19 के उभरने से पहले यह सर्वव्यापी रूप से प्रचलित नहीं था। नतीजतन, प्रशिक्षक और व्याख्याता अपने छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए इंटरनेट और अन्य ऑनलाइन तकनीकों का तेजी से उपयोग कर रहे हैं। महामारी छात्रों के लिए एक वैकल्पिक स्थिति नहीं है क्योंकि यह ऑनलाइन सीखने के अनुभव के उपयोग में अंतर का कारण बनती है इसलिए, शिक्षक शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को ऑनलाइन जारी रखने के लिए तैयार हैं, भले ही विश्वविद्यालय वास्तव में लॉकडाउन में हों। कुल पाँच सिद्धांत हैं जो विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षण के सफल वितरण में योगदान करते हैं।

1. सबसे पहले, छात्रों की ऑनलाइन सीखने की सामग्री शिक्षण व्यवहार और तत्परता के अनुरूप होनी चाहिए।
2. दूसरा, ऑनलाइन अध्ययन करते समय छात्रों के कम एकाग्रता स्तर के कारण सामग्री को ठीक से वितरित किया जाना चाहिए यह सुनिश्चित करने में शिक्षण की गति महत्वपूर्ण है।
3. तीसरा, ऑनलाइन सीखने की दक्षता सुनिश्चित करने के लिए कक्षा के बाद ईमेल निर्देश और ऑनलाइन वीडियो कोचिंग जैसी उचित सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
4. चौथा, ऑनलाइन कक्षाओं में छात्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षण सहायक कदम लागू किए जाने चाहिए।
5. पांचवां, खराब इंटरनेट कनेक्शन की समस्या जैसे संभावित मुद्दों को हल करने के लिए पाठ से पहले आकस्मिक उपायों को विकसित किया जाना चाहिए।

उपसंहार -- ऐसा मानने का पर्याप्त साक्ष्य है कि शैक्षिक उपलब्धि पर सोशल मीडिया का मिश्रित प्रभाव पड़ता है; यह शैक्षिक संसाधनों तक पहुँचने, सहयोगात्मक सीखने और कौशल विकास के लिए एक मंच प्रदान करता है, लेकिन अत्यधिक उपयोग ध्यान भटकाने, नींद की कमी, साइबरबुलिंग, तनाव, गलत सूचना और अवास्तविक तुलनाओं को जन्म दे सकता है जो मानसिक स्वास्थ्य और अकादमिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। छात्रों को इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने और लाभ उठाने के लिए सोशल मीडिया का संयमित और जिम्मेदार उपयोग करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

- [1]. अब्बास, जे., अमन, जे., नूरुन्नी, एम., और बानो, एस. (2019)। सतत शिक्षा के लिए सीखने के व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव, भारत के चुनिंदा विश्वविद्यालयों के छात्रों के साक्ष्य। सस्टेनेबिलिटी , 11 (6), 2019।

- [2]. आर.ए. दुबे, . (2008). कर्नाटक के युवाओं द्वारा इंटरनेट उपयोग के पैटर्न और चालक: एक खोजपूर्ण अध्ययन. मीडिया संकाय के चौथे वैज्ञानिक सम्मेलन की कार्यवाही: मीडिया और युवा मुद्दे (पृष्ठ 85-119) .
- [3]. प्रोफेसर सूरज देव ए. (2020) पश्चिम बंगाल के विश्वविद्यालयों में शैक्षिक उद्देश्यों के लिए वेब 2.0 अनुप्रयोगों के उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों की जाँच। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट इन्फॉर्मेशन एंड डिजीजन साइंसेज , 23 (2), 131-144।
- [4]. रंग रूप आनंद (2017)। शिक्षार्थियों के सीखने के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए सहयोगात्मक शिक्षण हेतु सोशल मीडिया के उपयोग का एक मॉडल। किंग सऊद विश्वविद्यालय-कंप्यूटर और सूचना विज्ञान जर्नल , 29 (4), 526-535।
- [5]. ताया, एस.ए. (2000). अरब जगत में इंटरनेट का उपयोग: अरब युवाओं के एक नमूने पर एक क्षेत्रीय अध्ययन. द इजिप्टियन जर्नल ऑफ पब्लिक ओपिनियन रिसर्च , 4 , 33-68.
- [6]. रामप्रसाद एण्ड संस (2012)। कासिम विश्वविद्यालय के छात्रों में इंटरनेट का उपयोग और शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक समायोजन, अवसाद और संचार कौशल से इसका संबंध। जर्नल ऑफ द इस्लामिक यूनिवर्सिटी फॉर एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल स्टडीज , 20 (1), 216-668।
- [7]. अलवागैत, ई., शहज़ाद, बी., और अलीम, एस. (2015). सऊदी अरब में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभाव. मानव व्यवहार में कंप्यूटर , 51 , 1092-1097.
- [8]. एंडरसन, के.जे. (2001). कॉलेज के छात्रों में इंटरनेट का उपयोग: एक खोजपूर्ण अध्ययन. जर्नल ऑफ अमेरिकन कॉलेज हेल्थ , 50 (1), 21-26.
- [9]. चुकुवेरे, जेई (2021)। छात्रों के सामाजिक संपर्क पर सोशल मीडिया का प्रभाव। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट इन्फॉर्मेशन एंड डिजीजन साइंसेज, 24 (7), 1-15।
- [10]. हांग, के.एस., रिड्जुआन, ए.ए., और कुएक, एम.के. (2003)। सीखने के लिए इंटरनेट के उपयोग के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण: दिल्ली के एक विश्वविद्यालय में एक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी , 6 (2), 45-49।
- [11]. कार्बिन्सकी, ए. (2010). फेसबुक और प्रौद्योगिकी क्रांति. न्यूयॉर्क, स्पेक्ट्रम प्रकाशन.
- [12]. ली, ईजे, ली, एल., और जैंग, जे. (2011). अंतर्राष्ट्रीय लोगों के लिए इंटरनेट: अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के कॉलेज समायोजन पर इंटरनेट उपयोग की प्रेरणाओं का प्रभाव। साइबर मनोविज्ञान, व्यवहार और सामाजिक नेटवर्किंग , 14 (7-8), 433-437.
- [13]. शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश (2004)। बहरीन विश्वविद्यालय के छात्रों में इंटरनेट का उपयोग और उसके उद्देश्य: एक क्षेत्रीय अध्ययन। द अरब जर्नल फॉर द ह्यूमैनिटीज़ , दिल्ली विश्वविद्यालय, 22 (86), 167-196।
- [14]. सईद, ए.ए. (2003)। विश्वविद्यालय के युवाओं के नैतिक मूल्यों और दृष्टिकोण पर इंटरनेट के उपयोग का प्रभाव। जनसंचार संकाय का नौवाँ वैज्ञानिक सम्मेलन: सिद्धांत और व्यवहार के बीच मीडिया नैतिकता , (पृष्ठ 1219-1267)।
- [15]. संगारी, ई., लिमयेम, एम., और रूईस, एस. (2011). छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर फेसबुक के उपयोग का प्रभाव: आत्म-नियमन और विश्वास की भूमिका. इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशनल साइकोलॉजी , 9 (3), 961-994.
- [16]. शाहनाज़, एल. (2011). किर्क्स के छात्रों के बीच फेसबुक उपयोगकर्ताओं की रूपरेखा और फेसबुक का उपयोग करने के उनके उद्देश्य (मास्टर थीसिस, कुआलाल यूनिवर्सिटी दिल्ली, 2011)।

- [17]. सुलेमान, आई.ए. और उमर, जेड. (2013)। छात्रों पर सोशल मीडिया का प्रभाव, दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय इस्लामिक विश्वविद्यालय एक मॉडल के रूप में। कंप्यूटर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में इस्लामी अनुप्रयोगों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल , 1 (2), 78-90।